हिन्दू राष्ट्र का

नवनिर्माण

आचार्य चतुरसेन शास्त्री

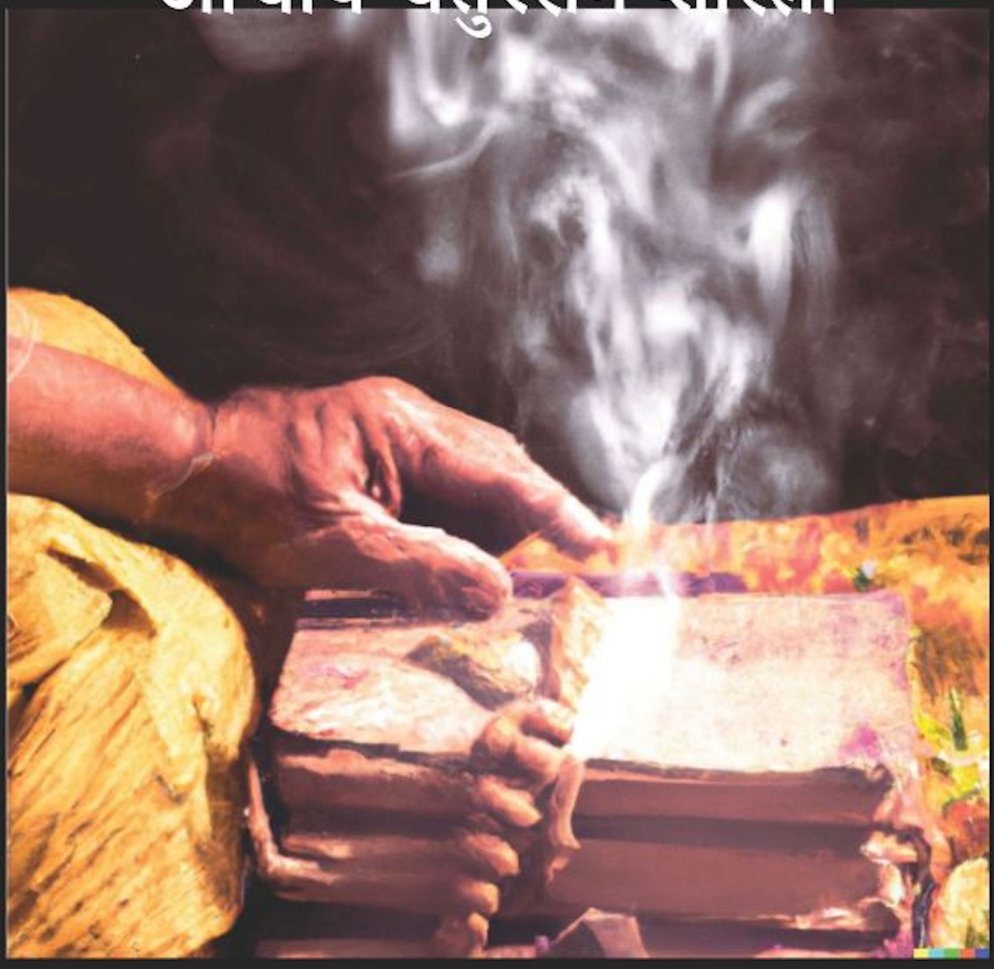

संपादन : दीपचंद्र निर्मोही

हिन्दी के मूर्धन्य लेखक

आचार्य चतुरसेन शास्त्री

की लौह लेखनी से निस्सृत क्रान्तिकारी ग्रन्थ

हिन्दू राष्ट्र का नव निर्माण

सम्पादक

दीपचन्द्र निर्मोही

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय, दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN 978-93-95380-43-0

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-22825424, 7291920186, 09350809192

www : anuugyabooks.com

आवरण

देव निर्मोही

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

HINDU RASHTRA KA NAV NIRMAN

by Acharya Shri Chatursen Shastri edited by Deepchandra Nirmohi

भूमिका

कुछ व्यक्तित्व इतने विरल और विलक्षण होते हैं कि उन्हें समझ लेना असम्भव तो नहीं, पर सरल कतई नहीं होता। ऐसे व्यक्तित्व सामने से दीख कुछ और रहे होते हैं, परन्तु होते कुछ और हैं। ऐसे लोग असाधारण क्षमता वाले होते हैं अकसर, उन्हें समझने के लिए उनके जीवन और रचना संसार के बीच से सतर्कतापूर्वक गुजर जाना बेहद जरूरी है।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री भी ऐसे ही व्यक्तित्वों में से एक हैं। उनका जन्म 26 अगस्त 1891 को उत्तर प्रदेश में बुलन्दशहर जनपद के गाँव चाँदोख में हुआ एक आर्य समाजी परिवार में। प्राथमिक शिक्षा गाँव के पास ही गुरुकुल सिकन्दराबाद में हुई। वहाँ त्याग, तप, बेलागबयानी और अनुशासन का पाठ पढ़ा जिसे उन्होंने अपनी जिन्दगी में उतार लिया था, पर वहाँ ज्ञान की प्यास न बुझ सकी तो वहाँ से भाग खड़े हुए और काशी पहुँच गये। सन्तुष्टि वहाँ भी न हुई तो जयपुर के संस्कृत कालेज में जा पहुँचे। वहाँ से शास्त्री की परीक्षा पास की और आयुर्वेदाचार्य की उपाधि भी प्राप्त की। आयुर्वेद महामंडल से आयुर्वेदाचार्य बनने वाले वे पहले छात्र थे। वहाँ वेदान्त भी खूब पढ़ा। इसके बाद वे अपनी जिन्दगी के सफर में उतर गये। दिल्ली आकर अपना औषधालय जमाया, पर वह ठीक से चल नहीं पाया। डी.ए.वी. कालेज लाहौर के आयुर्वेद विभाग में प्रोफेसर का स्थान रिक्त हुआ तो वहाँ पहुँच गये और आयुर्वेद के वरिष्ठ प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति पा गये पर अपने फक्कड़ स्वभाव के कारण वहाँ भी अधिक समय नहीं ठहर सके। इन दिनों साहित्य में उनकी अच्छी पकड़ हो गई थी। इनके साहित्य का सफर कविताओं से आरम्भ हुआ। उन्हीं दिनों आपने गद्य काव्य भी खूब लिखा। 'अन्तस्तल' नाम की पुस्तक छपी तो इन्हें साहित्य जगत में खूब पहचान मिली। यह पुस्तक उन दिनों कालेजों में खूब पढ़ाई जाती रही। उन दिनों आपकी साहित्य-रचना और वैद्यक दोनों साथ-साथ चलती रहीं। वैद्यक खूब चमकी तो रजवाड़ों की रसोइयों तक आपकी पहुँच हो गयी। कमाई इतनी कि सोना बरसने लगा। उस समय आप सोने की निब वाले कलम से नुस्खे लिखते थे। राजघराने इन्हें अपने यहाँ बुलाने के लिए बग्गी भेजते थे। काम से फुसरत थी ही नहीं। साहित्य-रचना अधिकतर रात में और दिन में वैद्यक, पर वैद्यक से अधिक इनका मन साहित्य-रचना में रमता था। परिणाम यह हुआ कि वैद्यक से बरसता धन भी इन्हें अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सका। और हुआ यह कि एक दिन इन्होंने वैद्यक को तिलांजलि दे दी और पूरी तरह साहित्य की शरण में आ गये। फलत: मुफलिसी के दरवाजे पर आ खड़े हुए। एक बार तो इन्हें पत्नी के गहने तक

बेचने पड़े, पर वैद्यक की ओर मुड़कर नहीं देखा। साहित्य-रचना में ऐसे खोये कि और कुछ का भान ही न रहा। दृढ़ संकल्प ऐसा कि किसी के डिगाये न डिगे। साहित्य की कोई ऐसी विधा रही होगी जिस पर उनकी कलम न चली हो। उपन्यास, कहानी, नाटक, संस्मरण, कविता, जीवनवृत्त आदि। विषय भी कोई ही ऐसा रहा हो जिसे उनकी कलम ने न छुआ हो। स्वास्थ्य, चिकित्सा, राजनीति और धर्म ऐसे सभी विषयों पर खुलकर लिखा। इतना लिखा कि उसकी कल्पना करना भी कठिन है। वे लगभग 68 वर्ष तक जीवित रहे। इन वर्षों में उनका बचपन और अध्ययन का समय भी सम्मिलित है। जो वर्ष बचे उनमें 186 ग्रन्थ लिखने की जानकारी उपलब्ध है। इन ग्रन्थों में भारी भरकम ग्रन्थ भी सम्मिलित है। 'हिन्दी भाषा का साहित्य और इतिहास' नाम का ग्रन्थ सात खंड़ों में मिलता है। एक-एक रात में सौ-सौ पृष्ठ भी आचार्य जी ने लिखे। 'एक रात' नाम की पुस्तक उन्होंने एक रात में ही लिखी। उन्होंने जो भी लिखा उसमें सच खूब और सपाट ढंग से लिखा मिलता है। समझौते करना उनकी आदत में था ही नहीं। एक साक्षात्कार में वे बताते हैं–'मेरे निर्णय से कोई शक्ति, कोई भय, कोई प्रलोभन मुझे हटा नहीं सकता।' प्रस्तुत पुस्तक उनके इस संकल्प की पुष्टि करती है। जो उन्हें ठीक जँचा उसे लिखकर ही दम लिया।

आचार्य चुतरसैन को अधूरा जानने वाले पाठकों को उनमें स्थान-स्थान पर विरोधाभास जैसा आभास उन्हें चौंकाने के लिए पर्याप्त है। जैसा कि मुझे भी ऐसा ही आभास तब तक उनके बारे में विचलित करता रहा जब तक कि मैंने उन्हें सम्पूर्ण रूप से समझने की कोशिश नहीं की। उन्हें आंशिक रूप से जानने वाले पाठक विशेषकर तथाकथित हिन्दू उनकी इस पुस्तक को पढ़कर भ्रमित हो बिदक सकते हैं। यह पुस्तक उन्हें विस्फोटक लग सकती है। इस पुस्तक में आचार्य चतुरसेन का क्रान्तिकारी लेखक उभरकर सामने आता है। सुधारक लेखक नहीं।

वे स्वयं इस सत्य को डंके की चोट उजागर करते हैं– "मैं भारतीय राष्ट्र सुधारना नहीं उसे विध्वंस करके फिर से उसका नव-निर्माण किया चाहता हूँ।"

प्रस्तुत पुस्तक 'हिन्दू राष्ट्र का नवनिर्माण' उस ग्रन्थ का एक भाग है जिसे वे 1929 में उस समय पूर्णता की ओर ले जा रहे थे जब क्रान्तिकारी भगतसिंह बहरी अँग्रेजी सरकार के कान खोलने के लिए साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ असैम्बली में बम-विस्फोट करने की तैयारी कर रहे थे। उस दो हजार पृष्ठों के ग्रन्थ का नाम था 'तब अब क्यों और फिर?'

8 अप्रैल 1929 के दिन जब भगतसिंह असैम्बली में बम फेंक रहे थे, उस दिन आचार्य चतुरसैन असैम्बली की दर्शक दीर्घा में मौजूद थे। उन्हें भगतसिंह स्वयं असैम्बली तक लेकर आये थे, परन्तु वे उस समय भगतसिंह को नहीं जानते थे, बलवन्त सिंह को जानते थे। अपने इसी छद्म नाम से भगतसिंह 'चाँद' के कार्यालय में आचार्य चतुरसैन से मिलते थे। असैम्बली में बम फेंकने के दिन जब उन्हें पता चला कि बलवन्त ही क्रान्ति का दीवाना भगतसिंह है तो वे हर्षातिरेक से उछल पड़े, पर इसी सन्देह में कि आचार्य चतुरसैन के